पत्रसूचनाकार्यालय (रक्षाविंग)
भारतसरकार
****

'हरकामदेशकेनाम'

नई दिल्लीः श्रावण 05, 1944
बुधवारः 27 जुलाई 2022

उन्नत युद्ध सामग्री नए युग के युद्ध की वास्तविकता है; राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक नवोन्मेषी और आत्मनिर्भर युद्ध सामग्रीबेस बनाने की जरूरतः 'ऐमो इंडिया' में रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

निजी क्षेत्र को वर्तमान में सशस्त्र बलों की युद्ध सामग्रीकी जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहन

स्थानीय प्रयासों और विदेशी सहयोग का समुचित मिश्रण आत्मनिर्भरता की ओर भारत की यात्रा का मूलमंत्र हैः रक्षा मंत्री

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने एक शक्तिशाली और आत्मनिर्भर आधार बनाने के लिए युद्ध सामग्री के क्षेत्र में नवोन्मेष करने का आह्वान किया जो सशस्त्र सेनाओं को भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार रखेगा। रक्षा मंत्री27 जुलाई 2022 को नई दिल्ली में 'मेक इन इंडिया के अवसर और चुनौतियां' विषय पर सैन्य युद्ध सामग्री (ऐमो इंडिया) से संबंधितदूसरे सम्मेलन के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने उन्नत युद्ध सामग्री को नए युग के युद्ध की वास्तविकता करार दियाजो भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक अनिवार्यताओं और सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए आवश्यक है।

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ एक राष्ट्र का आर्थिक विकास उसके अस्त्र-शस्त्र और युद्ध सामग्री की क्षमता में प्रतिबिंबित होता है। युद्ध सामग्री का विकास न केवल सुरक्षा के लिएबल्कि देश की सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए भी महत्वपूर्ण है। रक्षा मंत्री ने कहा, "भारत को एक विश्व शक्ति और रक्षा उत्पादन में अग्रणी देशों में से एक बनने के लिएहमें युद्ध सामग्री के स्वदेशी डिजाइन, विकास और उत्पादन में आगे बढ़ना होगा।

श्री राजनाथ सिंह ने बल देकर कहा कि सरकार रक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने और युद्ध सामग्री के क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने में निजी क्षेत्र द्वारा निभाई जा सकने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को समझती है, कई बाधाएं, जो पहले प्रचलित थीं, को दूर कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि बोलीदाताओं की भागीदारी, वित्तीय पात्रता के मानदंड या क्रेडिट रेटिंग जारी करने से लेकर सरकार ने विशेष छूट दी है। उन्होंने सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों, अनुसंधान और विकास संस्थानों,

स्टार्ट-अप, शिक्षा जगत और व्यक्तिगत नवोन्मेषकों को सशस्त्र बलों की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने वालेनए अवसरों को खोजनेहेतुआधार तैयार कर करने के लिएप्रेरित किया।

रक्षा मंत्री ने सटीक निर्देशित युद्ध सामग्री के महत्व पर भी बल दिया और कहा कि लगातार विकसित प्रकृति के कारण अस्त्र-शस्त्रों/प्लेटफार्मों के समरूप यह भविष्य के युद्धों में प्रमुख भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा,"1999 के कारगिल युद्ध में 'मुंथो ढालो' बेस पर सटीक निर्देशित युद्ध सामग्री के प्रयोग ने भारत की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बालाकोट में आतंकवादी शिविरों पर 2019 के हमलों के दौरान युद्ध सामग्री के सटीक प्रयोग ने भी परिचालन में हमारी सफलता सुनिश्चित की। आधुनिक युद्धक्षेत्रों में युद्ध सामग्री अपने नए अवतार में उभर रहा हैजो एक बार प्रोग्राम किए जाने के बाद स्वचालित रूप से इनपुट ले सकता है, पाठ्यक्रम सुधार कर सकता है और सही समय पर उचित स्थान पर लक्ष्य साध सकता है। पहले, केवल बमों के आकार और विस्फोटक क्षमता मायने रखती थीलेकिन अब उनकी तीक्ष्णता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। "

एक चुस्त, परिशुद्धता और स्वायत्त हथियार प्रणाली के लाभों के बारे में विस्तार से बताते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यह केवल वांछित क्षेत्रों पर ही लक्ष्य साधता है। उन्होंने कहा, "यदि किसी भी शत्रु के ठिकाने को नष्ट करना हैतो सटीक युद्ध सामग्री चुनिंदा रूप से इस पर लक्ष्य साधेगी, किसी भी नागरिक प्रतिष्ठान पर नहीं। पारंपरिक युद्ध सामग्रीऐसी नही हैं। युद्ध देश की सेना के साथ लड़े जाते हैं, न कि वहां के नागरिकों के साथ। सटीक युद्ध सामग्री के माध्यम सेनागरिक प्रतिष्ठानों के विनाश से बचा जा सकता है और युद्ध के समय में शांति और मानवता के मूल्यों को संरक्षित किया जा सकता है।"

रक्षा मंत्री ने 'रक्षा में आत्मनिर्भरता' प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया और कहा कि घरेलू उद्योग को सशक्त बनाने के लिए सभी प्रयास किए जा रहे हैंजो सशस्त्र बलों को घरेलू स्तर के विश्व स्तरीय अस्त्र-शस्त्रों/प्रणालियों से लैस कर सकता है और ये प्रयास राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित तीन सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियां स्पष्ट रूप से युद्ध सामग्री के स्वदेशी विनिर्माण की दिशा में सरकार के प्रयास को दर्शाती हैं। उन्होंने कहा, "चाहे पिनाका के लिए निर्देशित विस्तारित रेंज रॉकेट हो, उन्नत हल्के भार के टारपीडो, रेडिएशन रोधी मिसाइल या लोइटरिंग म्युनिशन, तीसरी सूची में इस तरह की 43 मदेंशामिल हैं। यह इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की हमारी प्रतिबद्धता और घरेलू रक्षा उद्योग के अनुसंधान, विकास और विनिर्माण कौशल में हमारे विश्वास को दर्शाता है। वर्तमानआयुद्ध प्रणालियों और युद्ध सामग्री की ये सूचियां हमारे उद्योग जगत को नई चुनौतियों का सामना करने और उनकी प्रगति सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित करेंगी।"

श्री राजनाथ सिंह ने इस तथ्य की सराहना की कि सात नई रक्षा कंपनियों में से छहजिन्हें पूर्ववर्ती आयुध निर्माणी बोर्ड से अलग किया गया थाने अपनी स्थापना के छह महीने के भीतर लाभ की सूचना दी है। उन्होंने कहा कि म्युनिशन्स इंडिया लिमिटेड को 500 करोड़ रुपये के निर्यात आदेश मिले हैं, उन्होंने इस उपलब्धि को देश में युद्ध सामग्री उद्योग की विशाल क्षमता का संकेतक बताया है।

रक्षा मंत्री ने रक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए कई अन्य सुधारों को सूचीबद्ध कियाजिसमें 2022-23 में घरेलू उद्योग के लिए पूंजी अधिग्रहण बजट का 68 प्रतिशत निर्धारित करना और निजी उद्योग, एमएसएमई और स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लिए घरेलू पूंजीगत क्रय बजट का 25 प्रतिशत आवंटित करना शामिल है। उन्होंने उस नीति पर भी प्रकाश डाला जो डीआरडीओ-उद्योग जगत के विशेष प्रयोजन वाहन को आवश्यक उन्नत रक्षा उत्पादों को विकसित करने की अनुमति देती है। उन्होंने कहा कि सरकार रक्षा क्षेत्र में एमएसएमई और स्टार्ट-अप की भूमिका के बारे में पूरी तरह से सचेत है, इसलिए, उनके लिए और अधिक अवसर पैदा करने के लिए रक्षा नवोन्मेष, स्टार्ट-अप चुनौतियां और प्रौद्योगिकी विकास कोष के दायरे का विस्तार किया गया है।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा मंत्रालय आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, साथ ही यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' परिकल्पना के अनुरूप विदेशी मूल उपकरण निर्माताओं को भारत में निवेश करने, विनिर्माण करने और निर्यात करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। उन्होंने कहा, "भारत सैन्य खर्च के मामले में दुनिया के शीर्ष 10 देशों में से एक हैजो इसे रक्षा के लिए सबसे आकर्षक बाजारों में से एक बनाता है। हम आत्मनिर्भरता की दिशा में स्थानीय प्रयासों और विदेशी सहयोग का एक समुचित मिश्रण रखने में विश्वास करते हैं। शिक्षित जनशक्ति, कम विकास लागत और उपभोग क्षमता के मामले में भारत इस प्रयास में सबसे आगे है। हमारी आत्मनिर्भरता वैश्विक उद्योगों के साथ सहयोग, समन्वय और साझेदारी पर आधारित है।"

इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने भारतीय नौसेना, डीपीएसयू और निजी क्षेत्र द्वारा विकसित उत्पादों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी का भी शुभारंभ किया। उन्होंने सम्मेलन में एक 'नॉलेज पेपर' का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ सैन्य और असैन्य अधिकारी और उद्योग जगत, शिक्षा जगत, स्टार्ट-अप के प्रतिनिधि और नवोन्मेषक भी उपस्थित थे।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) और सेंटर फॉर ज्वाइंट वारफेयर स्टडीज द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस दो दिवसीय सम्मेलन में सशस्त्र सेनाओं कीयुद्ध सामग्री की आवश्यकताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया जाएगा। सम्मेलन में टैंकों और कवचीय लड़ाकू वाहनों के लिएयुद्ध सामग्री; फ़्यूज़ सहित तोपखाने; हवाई रक्षा, हवाई हथियार; ड्रोन और काउंटर ड्रोन सिस्टम द्वारा सटीक हमलों के लिए हथियार; नौसैनिक हथियार और छोटे हथियारों के लिए युद्ध सामग्री; विस्फोटक और बारूदी सुरंगोंपर सत्र शामिल हैं। यह युद्ध सामग्री विनिर्माण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सभी हितधारकों जैसे उद्योग जगत, उपयोगकर्ताओं, डीआरडीओ और शिक्षा जगत को परस्पर मिलने और काम करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है।

एबीबी/डीके/डीएस